चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....The Tribune.....

दिनांक 3.1.2020 पृष्ठ संख्या....2.....कॉलम.....8.....

PATENT GRANTED TO HISAR VARSITY

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) here has been granted the patent for its technology design and development of pricking machine. RK Jhorar, Dean, College of Agricultural Engineering and Technology, said the machine was designed under the leadership of Prof Mukesh Kumar Garg and Dinesh Malik, student of the department of processing and food engineering of the college. He said the patent was applied for this machine in 2009. The machine got the patent for 20 years. Samar Singh, Vice-Chancellor praised the scientists on the achievement. Director of Research, SK Sehrawat, said the purpose of the machine was to prick aonla fruits. Pricking is an essential operation for the preparation of aonla 'murabba'. He further added that aonla or Indian gooseberry (Emblica officinalis) is highly nutritive and one of the richest source of vitamin C among fruits. It also contains proteins and is a rich source of calcium, phosphorous and iron.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... दैनिक भास्कर ....

दिनांक 3.9.2020 ...... पृष्ठ संख्या ...... 4 ...... कॉलम ...... 1-7 ......

ऑनलाइन माध्यम से होंगे दाखिले नहीं होगी फिजिकल रिपोर्टिंग

- कोरोना काल में एचएयू प्रशासन ने एग्जाम को शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न कराने के लिए तैयारियां को दिया अंतिम रूप
- मास्क के बिना छात्र एवं छात्राओं को परीक्षा में नहीं दिया जाएगा प्रवेश, दो घंटे का होगा एग्जाम

एचएयू में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का शेड्यूल : 6 सितंबर से सोशल डिस्टेंसिंग व मास्क के साथ होंगे एंट्रेस एग्जाम

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना महामारी के चलते स्नातकोत्तर और पीएचडी प्रोग्रामों में एडमिशन के लिए परीक्षा की तिथियां चार दिनों में विभाजित कर तय कर दी हैं। 6 सितंबर से परीक्षाएं होगी। सभी परीक्षाएं विद्यार्थियों की सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजर का विशेष ध्यान रखते हुए आयोजित कराई जाएंगी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने सभी परीक्षार्थियों से आह्वान किया है कि वे परीक्षा के लिए अपनी तैयारी जारी रखें और परीक्षा संबंधी किसी हिदायत और बदलाव के संबंध में विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देखते रहें। एग्जाम में करीब 3500 छात्र एवं छात्राएं शामिल होंगी। वहीं एचएयू प्रशासन ने निर्णय लिया है कि ऑनलाइन माध्यम से दाखिले किए जाएंगे। फिजिकल रिपोर्टिंग नहीं होगी।

प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से यह फैसला कोरोना के चलते लिया गया है। उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष ये परीक्षाएं जून व जुलाई माह में आयोजित की जाती रही हैं, लेकिन कोरोना के चलते इस बार परीक्षाओं को सितंबर माह के प्रथम पखवाड़े से कराया जाएगा। इसके लिए सभी परीक्षाओं की तिथियां घोषित कर दी गई हैं, जिनमें उत्तर कुंजी प्रकाशित करने व परिणाम घोषित करने की तिथियां भी शामिल हैं। ऑनलाइन काउंसिलिंग, कागजातों या प्रमाण-पत्रों में किसी प्रकार की कमी संबंधी जानकारी, कमी दूर करने की तिथि, ऑनलाइन सीट अलॉटमेंट व ऑलनाइन फीस जमा करवाने, मेडिकल जांच और कोर्स पंजीकरण के लिए भी तिथियां निर्धारित कर दी गई हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई हैं। रिजल्ट 22 सितंबर के बाद घोषित किए जाएंगे। उम्मदवारों व उनके अभिभावकों से अपील की है कि वे स्नातक व स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिला संबंधी नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडॉटएचएयूडॉटएसी डॉटइन पर चेक करते रहें। मास्क के बिना छात्रों को परीक्षा में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। डिस्टेंस का भी ध्यान रखा जाएगा।

फॉर्म में कमी मिलने पर स्टूडेंट को दी जाएगी सूचना

प्रो. आशा क्वात्रा ने बताया कि स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में दाखिले विवि के दाखिला पोर्टल डब्ल्यूडब्ल्यूडॉट एचएयूडॉटएसीडॉटइन के माध्यम से ऑनलाइन ही होंगे। इस वर्ष फिजिकल रिपोर्टिंग नहीं होगी। उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी तो मोबाइल नंबर व ई-मेल आईडी पर सूचित किया जाएगा।

करीब 3500 स्टूडेंट्स परीक्षा में शामिल होंगे

स्नोत्तकोत्तर प्रोग्राम मे करीब 3500 छात्र एवं छात्राएं परीक्षा देगी। एचएयू प्रशासन ने निर्णय लिया है कि एक पेपर में एक दिन में करीब 800 छात्र शामिल हो सकेंगे।

ARYANS
GROUP OF COLLEGES
RAJPURA, NEAR CHANDIGARH
NURSING
GNM (3 Years) | ANM (2 Years)
Engg | Law | Pharma | Agri | Mgmt | B.Ed
Scholarship for Needy Students
Call: 98762-99888

यह है एंट्रेस एग्जाम की डेटशीट

- एमएससी एग्रीकल्चर - 6 सितंबर
- एमटेक कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियर टेक्नोलॉजी-6 सितंबर
- एमएससी होम साइंस-6 सितंबर
- एमएससी कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एंड हम्यूडिटी - 9 सितंबर
- एमएससी फिशरीज साइंस - 16 सितंबर
- एमएससी सामाजिक विज्ञान- 16 सितंबर
- पीएचडी कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस- 12 सि.
- पीएचडी कालेज ऑफ एग्रीकल्चर, कॉलेज ऑफ होम साइंस- 16 सितंबर
- पीएचडी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, कॉलेज ऑफ होम साइंस, कॉलेज ऑफ फिशरीज साइंस, कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी एमबीए- 16 सितंबर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........अमर उजाला........

दिनांक ...3.9.2020... पृष्ठ संख्या ....4.... कॉलम ....1-5....

एचएयू : चार दिनों में होगी स्नातकोत्तर की प्रवेश परीक्षा

विश्वविद्यालय ने परीक्षा और ऑनलाइन काउंसिलिंग की तिथियां जारी की, 6, 9, 12 और 16 सितंबर को होगी परीक्षा

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना महामारी के चलते स्नातकोत्तर व पीएचडी प्रोग्रामों के लिए परीक्षा की तिथियां चार दिनों में विभाजित कर तय कर दी हैं। सभी परीक्षाएं विद्यार्थियों की सामाजिक दूरी, मास्क व सैनिटाइजर का विशेष ध्यान रखते हुए आयोजित कराई जाएंगी।

कुलपति प्रो. समर सिंह ने सभी परीक्षार्थियों से आह्वान किया है कि वे परीक्षा के लिए अपनी तैयारी जारी रखें और परीक्षा संबंधी किसी हिदायत व बदलाव के संबंध में विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देखते रहें। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रो. आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से यह फैसला कोरोना महामारी के चलते लिया गया है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6, 9, 12 और 16 सितंबर को तय की गई हैं।

पहले जून और जुलाई में होती थी प्रवेश परीक्षा : कुलपति ने बताया कि प्रतिवर्ष ये परीक्षाएं जून व जुलाई माह में

महामारी के चलते इस बार परीक्षाओं को सितंबर माह के प्रथम पखवाड़े से कराया जाएगा। परीक्षा, उत्तर कुंजी जारी करने, ऑनलाइन काउंसलिंग, कागजातों या प्रमाणपत्रों में किसी प्रकार की कमी संबंधी जानकारी, कमी दूर करने की तिथि, ऑनलाइन सीट अलॉटमेंट व ऑलनाइन कोर्स पंजीकरण के लिए भी तिथियां निर्धारित कर दी गई हैं। उम्मीदवार या अभिभावकों विवि की वेबसाइट पर जाकर सभी तरह की जानकारी ले सकते हैं।

दस्तावेजों में कमी पर मोबाइल व मेल पर किया जाएगा सूचित : स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिले माध्यम से ही होंगे। इस वर्ष किसी प्रकार की फिजिकल रिपोर्टिंग नहीं होगी। उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड किए गए कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी, तो उसे फार्म भरते समय उम्मीदवारों द्वारा दिए गए मोबाइल नंबर व ई-मेल आईडी पर सूचित किया निर्धारित समय अवधि में सूचना के बावजूद इस कमी को दूर नहीं किया तो पहली काउंसलिंग में उसे सीट अलॉट नहीं की जाएगी। दूसरी काउंसलिंग के लिए तिथि अलग से जारी की जाएंगी। प्रोस्पेक्ट्स में दिए दाखिला व आरक्षण संबंधी नियम व शर्तों में किसी प्रकार का

नेट की घोषित तिथि के बीच होगी गुजवि की पीजी परीक्षाएं, विद्यार्थियों ने जताई आपत्ति

हिसार। गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय ने अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की परीक्षाओं के लिए डेटशीट घोषित कर दी है, लेकिन यह अधिकांश परीक्षाएं यूजीसी नेट की घोषित तिथि से मेल खा रही हैं। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने यूजीसी नेट की परीक्षाएं 16 से 25 सितंबर के बीच रखी हुई हैं, जिनके एडमिट कार्ड एक-दो दिनों में जारी होने हैं।

गुजवि द्वारा जारी की गई पोस्ट ग्रेजुएशन के विद्यार्थियों की परीक्षाओं की तिथि भी इसी बीच है। ऐसे में विद्यार्थियों ने डेटशीट बदलने की मांग करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार को ऑनलाइन शिकायत की है। विद्यार्थियों ने कहा कि स्नातकोत्तर की अंतिम वर्ष की परीक्षाओं की

तिथि बदली जाए, ताकि विद्यार्थी दोनों परीक्षाएं दे सकें।

रुकने का प्रबंध करें विद्यार्थी : विवि प्रशासन ने कॉलेजों और विवि कैंपस में होने वाली ऑफलाइन परीक्षाओं के संबंध में जो निर्देश जारी किए हैं, उनके अनुसार जो विद्यार्थी दूर दराज से हैं और ऑफलाइन परीक्षाएं देना चाहते हैं, उन्हें शहर में रहने का प्रबंध स्वयं करना होगा। हॉस्टल नहीं खोले जाएंगे। हालांकि विद्यार्थी ऑनलाइन परीक्षाएं भी दे सकते हैं, लेकिन वेब कैमरे से सॉफ्टवेयर की नजर विद्यार्थियों पर रहेगी।

विवि कैंपस के विद्यार्थियों का शेड्यूल चेयरपर्सन करेंगे फाइनल : विवि कैंपस में पढ़ाई करने वाले विभिन्न कोर्सों की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों का शेड्यूल संबंधित विभाग के चेयरपर्सन या डायरेक्टर ही जारी करेंगे। विद्यार्थियों को अपने विभागों व चेयरपर्सन के संपर्क में रहना होगा। विवि प्रशासन के अनुसार, इस बार परीक्षाओं के लिए कोई री-वैल्यूएशन नहीं होगा और न ही मेडल या मेरिट सर्टिफिकेट अवार्ड दिए जाएंगे।

इनसो ने वेब कैमरों से निगरानी का जताया विरोध : इनसो के गुजवि चेयरमैन हरिंद्र बैनिवाल ने कहा कि विवि प्रशासन ऑनलाइन नजर रखेगा और विद्यार्थी को हिलना-डुलना नहीं है। अगर ऐसा हुआ तो पेपर रद्द होगा, तो दो घंटे तक विद्यार्थी का फोन ऑन रहेगा या नहीं, इंटरनेट डिस्कनेक्ट होगा या नहीं, इस बात की क्या गारंटी है। पेपर रद्द या यूएमसी का यह तरीका सही नहीं है। विद्यार्थी घर से परीक्षाएं इसलिए दे रहे हैं, क्योंकि वे डर रहे हैं। विवि प्रशासन बेशक निगरानी रखे, लेकिन अनावश्यक शर्तें वापस ले।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक 3.9.2020 पृष्ठ संख्या 3 कॉलम 3-4

एचएयू में स्नातकोत्तर कोर्स में प्रवेश के लिए परीक्षा 6 से

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय। ● जागरण आर्काइव

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में 6 सितंबर से लिखित प्रवेश परीक्षा शुरू होगी। इसके लिए 6 के अलावा, 9, 12 व 16 सितंबर की तारीख तय की गई है। विवि में दाखिले के लिए अब तक जून व जुलाई माह में प्रवेश परीक्षा होती थी, लेकिन इस बार कोरोना के चलते इन्हें टालना पड़ा था। कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि परीक्षा से जुड़ा कोई बदलाव होता है कि तो उसे विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपडेट कर दिया जाएगा। उत्तर कुंजी प्रकाशित करने व परिणाम घोषित करने की तारीख वेबसाइट पर डाल दी जाएंगी। वहीं ऑनलाइन काउंसिलिंग, सीट अलॉटमेंट, फीस जमा करवाने, मेडिकल जांच और कोर्स पंजीकरण के लिए भी तिथियां निर्धारित कर दी गई हैं।

प्रतिवर्ष यह परीक्षाएं जून व जुलाई माह में आयोजित की जाती रही हैं। कोरोना के चलते इस बार परीक्षाओं को सितंबर माह के प्रथम पखवाड़े से कराया जाएगा।

-प्रो. आशा क्वात्रा, अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर, एचएयू

फिजीकल रिपोर्टिंग नहीं लेगा विवि : इस वर्ष किसी प्रकार की फिजीकल रिपोर्टिंग नहीं होगी। उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड किए गए कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी तो उम्मीदवार को फार्म भरते समय दिए गए मोबाइल नंबर व ई-मेल आइडी पर सूचित किया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 3.9.2020.....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम....1-4.....

हकृवि ने जारी की स्नातकोत्तर प्रोग्रामों की डेट शीट

ऑनलाइन काऊंसिलिंग की तिथियां भी जारी

हिसार, 2 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना महामारी के चलते स्नातकोत्तर व पी.एच.डी. प्रोग्रामों के लिए परीक्षा की तिथियां 4 दिनों में विभाजित कर तय कर दी हैं। सभी परीक्षाएं विद्यार्थियों की सामाजिक दूरी, मास्क व सैनिटाइजर का विशेष ध्यान रखते हुए आयोजित कराई जाएंगी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने सभी परीक्षार्थियों से आह्वान किया है कि वे परीक्षा के लिए अपनी तैयारी जारी रखें और किसी हिदायत व बदलाव के संबंध में विश्वविद्यालय की वैबसाइट पर देखते रहें।

स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रो. आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से यह फैसला कोरोना महामारी के चलते लिया गया है। उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष ये परीक्षाएं जून व जुलाई माह में आयोजित की जाती रही हैं, लेकिन कोरोना महामारी के चलते इस बार परीक्षाओं को सितम्बर माह के प्रथम पखवाड़े से कराया जाएगा।

इसके लिए सभी परीक्षाओं की तिथियां घोषित कर दी गई हैं, जिनमें उत्तर कुंजी प्रकाशित करने व परिणाम घोषित करने की तिथियां भी शामिल हैं। इसी प्रकार ऑनलाइन काऊंसिलिंग, कागजातों या प्रमाण-पत्रों में किसी प्रकार की कमी संबंधी जानकारी, कमी दूर करने की तिथि, ऑनलाइन सीट अलॉटमैंट व ऑलनाइन फीस जमा करवाने, मैडीकल जांच और कोर्स पंजीकरण के लिए भी तिथियां निर्धारित कर दी गई हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई हैं।

ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे दाखिले, नहीं होगी फिजीकल रिपोर्टिंग

प्रो. आशा क्वात्रा ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिले विश्वविद्यालय के दाखिला पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे। इस वर्ष किसी प्रकार की फिजीकल रिपोर्टिंग नहीं होगी।

उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड किए गए कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी तो उसे फार्म भरते समय उम्मीदवारों द्वारा दिए गए मोबाइल नंबर व ई-मेल आई.डी. पर सूचित किया जाएगा।

अगर किसी उम्मीदवार ने निर्धारित समय अवधि में सूचना के बावजूद इस कमी को दूर नहीं किया तो पहली काऊंसिलिंग में उसे सीट अलॉट नहीं की जाएगी। दूसरी काऊंसिलिंग के लिए तिथि अलग से जारी की जाएंगी। इसके अलावा विश्वविद्यालय के प्रोस्पैक्ट्स में दिए दाखिला व आरक्षण संबंधी नियम व शर्तों में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........हरि भूमि........

दिनांक ..3.9.2020.. पृष्ठ संख्या.....4........ कॉलम....1........

हकृवि में पीएचडी और स्नातकोत्तर की परीक्षा 6 से

हिसार। हरियाणा कृषि विवि प्रशासन ने कोरोना महामारी के चलते स्नातकोत्तर तथा पीएचडी प्रोग्रामों के लिए परीक्षा की तिथियां चार दिनों में विभाजित कर तय कर दी हैं। परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई हैं। सभी परीक्षाएं विद्यार्थियों की सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजर का विशेष ध्यान रखते हुए आयोजित कराई जाएंगी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने सभी परीक्षार्थियों से आह्वान किया है कि वे परीक्षा संबंधी किसी हिदायत अथवा बदलाव के संबंध में विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देखते रहें। विवि प्रशासन की ओर से यह फैसला कोरोना के चलते लिया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक भास्कर........

दिनांक ....3.9.2020....पृष्ठ संख्या.......4.......कॉलम.......4-8......

फायदे की बात • एचएयू और कृषि विभाग के अधिकारी कर रहे किसानों को जागरूक

सितंबर में टमाटर, मिर्च, पालक, गोभी समेत 12 तरह की सब्जियां उगा कमा सकते हैं मुनाफा

समय पर कीटनाशक दवाई का छिड़काव करने की भी अपील

महबूब अली | हिसार

सितंबर माह में टमाटर से लेकर बैंगन, मिर्च, भिंडी, कद्दू, मूली, खरीफ प्याज, शकरकंदी, अरबी, फूलगोभी, बंद गोभी, पालक आदि की फसल उगाकर और उगाई गई फसल की देखरेख कर किसान मुनाफा कमा सकते है। हिसार का एचएयू और कृषि विभाग के अधिकारी भी सितंबर माह में उक्त सब्जियों को उगाने की सलाह दे रहे है। यहीं नहीं किसानों को एसएमएस और सोशल मीडिया के माध्यम से भी सब्जियों को उगाने की सलाह दी जा रही है।

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह और कृषि रक्षा अधिकारी डा. अनुराग सांगवान और डा. गगन कुमार जोशी के अनुसार यदि किसान समय पर उगाई गई फसलों की देखरेख करें तो उनमें लगने वाली बीमारियों से भी बचाया जा सकता है। बताया कि सितंबर माह में इन सब्जियों की उगाई और देखरेख की बहुत ही जरूरत है।

1. टमाटर : रोपी गई पौध की देखरेख करें तथा नाईट्रोजन खाद्य की पहली मात्रा रोपाई लगभग 5 सप्ताह बाद डालें। एक एकड़ खेत में लगभग 14 किलोग्राम नाईट्रोजन देकर सिंचाई करें। हानिकारक कीटडों बीटल, हरा तेला, सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर 400 मिलीलीटर मैलाथियान 50ईसी को 250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

2. बैंगन : फसल में नाईट्रोजन खाद की दूसरी मात्रा देकर सिंचाई करें। हानिकारक कीटों से बचाव के लिए कीटनाशक दवाई का प्रयोग भी करें।

3. मिर्च : नाईट्रोजन खाद्य की दूसरी मात्रा यानि 17 किलोग्राम यूरिया खाद्य प्रति एकड़ देकर सिंचाई करें। फल का गलना और टहनीमार रोग से बचाव के लिए 400 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 10 से 15 दिन के अंतर पर छिड़के।

4. भिंडी : फसल में नाईट्रोजन खाद की दूसरी मात्रा देकर सिंचाई करें। हानिकारक कीड़ों से बचाव के लिए 15 दिन के अंतराल में कीटनाशक दवाई का छिड़काव करें।

5. कद्दू : नाईट्रोजन खाद की दूसरी मात्रा 12 किलोग्राम यूरिया खाद प्रति एकड़ देकर सिंचाई करें।

6. मूली, शलगम व गाजर : बिजाई के लगभग एक माह बाद 13 किलोग्राम नाईट्रोजन प्रति एकड देकर मिट्टी चढ़ा दें तथा सिंचाई करें। बोने से पहले बीज का कैप्टान या थाइरम से उपचार करें।

7. खरीफ प्याज : रोपाई की गई फसल की देखरेख करें। सिंचाई करें व जल का निकास करें।

8. शकरकन्दी : शकरकंदी की फसल में नाईट्रोजन खाद की दूसरी मात्रा 35 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ देकर मिट्टी चढ़ा दें तथा सिंचाई करें।

9. अरबी : अरबी की फसल में 17 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड़ डालकर सिंचाई करें। अंगमारी या झुलसा रोग से बचाव के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराईड का घोल 200 लीटर पानी में बनाकर छिड़काव करें।

10. फूलगोभी : अगेती किस्म पूसा कातकी की खेत में उचित देखभाल करें। नाईट्रोजन खाद्य देने के बाद ही सिंचाई करें। अगेती गोभी को सूंडी आदि के प्रकोप से बचाने के लिए 400 मिली मैलाथियान 50 ईसी को 250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ फसल पर हर 10 दिन बाद छिड़काव करें।

11. बंदगोभी, गांठगोभी : गोभी की बिजाई, पौध तैयार करने के लिए नर्सरी में करें। बंदगोभी की अगेती किसमें प्राइड ऑफ इंडिया या गोल्डन लगाएं। एक एकड़ में लगभग 200 से 250 ग्राम बीज की आवशयकता होगी। बीज को बोने से पहले कैप्टान नामक दवा से उपचारित करें।

12. पालक : बिजाई के लगभग 4 सप्ताह बाद नाईट्रोजन खपद की पहली मात्रा दें तथा उसके लगभग 4 सप्ताह बाद दूसरी मात्रा देकर सिंचाई करें। प्रत्येक कटाई के बाद 16 किलोग्राम नाईट्रोजन खाद प्रति एकड़ की दर से दें तथा उसके बाद सिंचाई करें।

प्रत्येक जिले में बनेंगे दस-दस किसान समूह

जिला उद्यान अधिकारी सुरेंद्र कुमार सिहाग का कहना है कि किसानों को कृषि और जिला उद्यान विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ देने के लिए जिला में दस किसान समूह बनाए जायेंगे। सभी जिलों में लगभग दस-दस किसान समूह बनाने का टारगेट दिया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक भास्कर....

दिनांक ...3.9.2020...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....6-8.....

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के सर्वे में खुलासा

हल्की जमीन, पर्याप्त वर्षा न होने और पोषण प्रबंधन के अभाव में रोग ग्रस्त हो रही कपास

भास्कर न्यूज. हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह के निर्देश पर वैज्ञानिकों की एक टीम ने नरमा कपास की फसल में इन दिनों आई समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। फसल में आई समस्या के कारणों का पता लगाते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने पाया कि हल्की जमीन जहां समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं हुई, पोषण प्रबंधन का अभाव, सफेद मक्खी के लिए अनुकूल वातावरण एवं फसलों में बिना सिफारिश के कीटनाशकों व फफूंदनाशकों का मिश्रित प्रयोग इत्यादि कारण है। इसके अलावा फसल का प्रभावित करने वाले कई अन्य कारण भी शामिल हैं।

कृषि वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. कृष्णा रोलनिया, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनमोहन व डॉ. संदीप कुमार शामिल रहे। इन वैज्ञानिकों की टीम ने हिसार के खरकड़ा, हसनगढ़, न्यौली कलां,

किसानों से बातचीत करते एचएयू के कृषि वैज्ञानिक।

भेरियां, बहबलपुर, बरवाला एवं कुंभाखेड़ा, भिवानी जिले के गांव बख्खतावरपुरा, मंढोली कलां, ईशरवाल, सरल, खरखड़ी-माखवान, गारणपुरा खुर्द, मिरान, खावा, थिलोड़, मंढाण, झावरी एवं कालौद, जींद जिले के गांव करसिंधु, पालवां, उचाना कलां, दुर्जनपुर, कापड़ो एव खेड़ी मसानियां का सर्वे किया।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे में यह बात निकलकर सामने आई कि जिन इलाकों में हल्की जमीन है, उन खेतों में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। हिसार के कुछ क्षेत्र तथा भिवानी के तोशाम के आस-पास के क्षेत्रों में पौधों के झुलसने व नीचे से पत्तियों के सूखने की समस्या अधिक पाई गई है। इसके अलावा जहां बारिश देरी से हुई उन क्षेत्रों में पौधों की पत्तियों के झुलसने की समस्या एकसाथ उत्पन्न हुई है। वर्षा का समय से न होना या बारिश का एक समान न होना भी प्रमुख कारण है। इसके अलावा कपास की फसल में इस समय टिंडे बन चुके हैं और पौधों को अच्छी खुराक व नमी की आवश्यकता है। रेतीली मिट्टी में जमीन में उपलब्ध पोषक तत्वों की उपलब्धता अच्छी बारिश होने पर या अच्छी सिंचाई करने पर इस अवस्था में कम हो जाती हैं। इसलिए पोषक तत्वों का पत्तों पर छिड़काव मददगार साबित हो सकता है। किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश की फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग किया गया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पोषण के चलते समस्या बढ़ी है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे के दौरान पाया गया है कि 62 से 75 प्रतिशत खेतों में सफेद मक्खी का स्तर आर्थिक कगार से ऊपर पाया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पंजाब केसरी........

दिनांक 3.9.2020 पृष्ठ संख्या.......4.......कॉलम......1-6......

कृषि वैज्ञानिकों ने किया नरमा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

कहा - समन्वित प्रबंधन जरूरी, जरूरत के समय कम बारिश होने सहित कई अन्य कारणों से हुई फसल खराब

हिसार, 2 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान फसल में आई समस्या के कारणों का पता लगाते हुए पाया कि हल्की जमीन, जहां समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं हुई, पोषण प्रबंधन का अभाव, सफेद मक्खी के लिए अनुकूल वातावरण एवं फसलों में बिना सिफारिश के कीट व फफूंदनाशकों का मिश्रित प्रयोग के अलावा फसल प्रभावित करने वाले कई अन्य कारण भी शामिल हैं। कृषि वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. कृष्णा रोलनिया, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनमोहन व डॉ. संदीप कुमार शामिल थे।

इन गांवों का किया दौरा

वैज्ञानिकों की टीम ने हिसार के खरकड़ा, हसनगढ़, न्यौली कलां, भेरियां, बहबलपुर, बरवाला एवं कुंभाखेड़ा, भिवानी जिले के गांव बख्तावरपुरा, मंढोली कलां, ईशरवाल, सरल, खरखड़ी-माखवान, गारणपुरा खुर्द, मिरान, खावा, थिलोड़, मंढाण, झावरी एवं कालौद, जींद जिले के गांव करसिंधु, पालवां, उचाना कलां, दुर्जनपुर, कापड़ो एव खेड़ी मसानियां का सर्वे किया।

फसल की जांच करते कृषि वैज्ञानिक।

ऐसे करें फसल का बचाव

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पत्तों पर छिड़काव के रूप में 2.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 100 लीटर पानी या पोटेशियम नाइट्रेट(13-00-45) की 2.0 किलोग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से प्रयोग करें। इसके अलावा सफेद मक्खी के लिए स्पाइरोमेसिफेन (ऑबरोन) 22.9 एस.सी. की 240 मिलीलीटर मात्रा या नीम आधारित कीटनाशक (निम्बिसीडीन/अचूक) की 1.0 लीटर मात्रा या पाइरीप्रोक्सीफेन(डायटा)10 ई.सी. की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से पौधों पर निचली पत्तियों तक छिड़काव करें। यदि कपास के पत्ते ज्यादा काले दिखाई दें तो कॉपर ऑक्सिक्लोराइड की 600 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। पेराविल्ट बीमारी के सभावित इलाकों में कोबाल्ट क्लोराइड की 2.0 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में लक्षण दिखाई देने के 24 से 48 घंटों के अंदर छिड़काव करें। जहां सिंचाई या बारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरझा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।

बनभौरी में लगाया किसान जागरूकता कैंप

हिसार, 2 सितम्बर (ब्यूरो): कृषि विभाग के अधिकारियों ने गांव बनभौरी में कपास फसल पर किसान प्रशिक्षण शिविर व फसल अवशेष प्रबंधन खण्ड स्तरीय जागरूकता शिविर का आयोजन किया। शिविर की अध्यक्षता खंड कृषि अधिकारी डॉ. रघुबीर सिंह ने की। उन्होंने कपास फसल का अधिक उत्पादन लेने के लिए तथा किसानों को फसल मे कीट व रोग उपचार के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सफेद मक्खी, उखेड़ा, जड़-गलन के रोगों के कारण कपास की फसल खराब हो रही है। किसानों को अपनी कपास की फसल में विभिन्न कीटनाशकों को मिलाकर छिड़काव करने की बजाय एक किस्म की दवाई का ही स्प्रे करना चाहिए। किसानों को जमीन की उपजाऊ शक्ति बरकरार रखने के लिए रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक एवं गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने किसानों के खेतों में जाकर खराब हुई कपास की फसल का जायजा भी लिया। कृषि विकास अधिकारी डॉ. राजेश नैन ने विभिन्न विभाग की स्कीमों के बारे किसानों को रूबरू करवाया। इसके अलावा प्रगतिशील किसान गांव ब्याना खेड़ा वासी सूरजमल ने किसानों जैविक खेती बारे विस्तार से चर्चा कर किसानों को जागरूक किया।

हल्की जमीन वाले क्षेत्रों में ज्यादा समस्या

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे में यह बात निकलकर सामने आई कि जिन इलाकों में हल्की जमीन है, उनमें यह समस्या ज्यादा पाई गई है। हिसार तथा भिवानी के आस-पास के क्षेत्रों में पौधों के झुलसने व नीचे से पत्तियों के सूखने की समस्या अधिक पाई गई है। इसके अलावा जहां बारिश देरी से हुई उन क्षेत्रों में पौधों की पत्तियों के झुलसने की समस्या एकसाथ उत्पन्न हुई है। वर्षा का समय से न होना या एक समान न होना भी इस समस्या का प्रमुख कारण है। इसके अलावा कपास की फसल में इस समय टिंडे बन चुके हैं और पौधों को अच्छी खुराक व नमी की आवश्यकता है। रेतीली मिट्टी मे उपलब्ध पोषक तत्वों की उपलब्धता अच्छी बारिश या अच्छी सिंचाई होने पर इस अवस्था में कम हो जाती हैं। इसलिए पोषक तत्वों का पत्तों पर छिड़काव मददगार साबित हो सकता है। इसके अलावा कपास की संकर किस्मों (हाइब्रिड) की जड़ों का विकास भी कम पाया गया। कई खेतों में सूती मोल्ड, पैराविल्ट एवं जड़-गलन बीमारी के लक्षण भी दिखाई दिए हैं। इस साल सफेद मक्खी की संख्या बाकी वर्षों के मुकाबले ज्यादा है, किंतु प्रभावित एवं अच्छी फसल वाले इलाकों में सफेद मक्खी की संख्या एवं प्रकोप में ज्यादा अंतर नहीं मिला। रेतीली जमीन में नमी एवं पोषक तत्वों पर खास ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अलावा किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश की फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग किया गया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पोषण के चलते समस्या बढ़ी है।

62 से 75 प्रतिशत खेतों में सफेद मक्खी का स्तर ज्यादा

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे के दौरान पाया गया है कि 62 से 75 प्रतिशत खेतों में सफेद मक्खी का स्तर ज्यादा पाया गया, लेकिन दोमट मिट्टी वाले खेतों में कपास की फसल के खराब होने की समस्या कम पाई गई, जबकि रेतीली मिट्टी में उगाई गई कपास में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि कपास की फसल में आई समस्या की केवल जांच के बाद ही सिफारिश किए गए कीटनाशक या फफूंदनाशी का प्रयोग करना चाहिए। कपास की फसल में सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी के लिए 20 पौधों का निरीक्षण सप्ताह में 2 बार करें और कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों की सलाह से ही फसल में आवश्यकतानुसार कीटनाशकों का प्रयोग करें। कीटनाशकों के मिश्रित घोल के प्रयोग से बचें क्योंकि ये सफेद मक्खी की समस्या को बढ़ावा दे सकते हैं। खासकर हल्की मिट्टी में उगाई गई कपास में खाद प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........हरि भूमि........

दिनांक ....3.9.2020....पृष्ठ संख्या........9........कॉलम......1-6......

एचएयू के कृषि वैज्ञानिकों ने किया नरमा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

कम बारिश होने से नरमा की फसल हो रही प्रभावित

- जरूरत के समय कम बारिश होने सहित कई अन्य कारणों से हुई फसल खराब

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

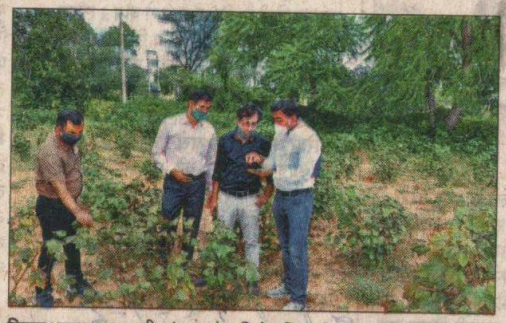

नरमा कपास की फसल में इन दिनों आई समस्या को ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के टीम ने कुलपति प्रो. समर सिंह के निर्देश पर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान फसल में आई समस्या के कारणों का पता लगाते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने पाया कि हल्की जमीन जहां समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं हुई, पौषण प्रबधंन का अभाव, सफेद मक्खी के लिए अनुकूल वातावरण एवं फसलों में बिना सिफारिश के कीटनाशकों व फफूंदनाशकों का मिश्रित प्रयोग, इत्यादि कारण है। इसके अलावा फसल का प्रभावित करने वाले कई अन्य कारण भी शामिल हैं। वैज्ञानिकों की टीम ने हिसार के खरकड़ा, हसनगढ़, न्यौली कलां, भेरियां, बहबलपुर, कापड़ो, बरवाला एवं कुंभाखेड़ा, भिवानी जिले के गांव बक्खतावरपुरा, मंढोली कलां, ईशरवाल, सरल, खरखड़ी-माखवान, गारणपुरा खुर्द, मिरान, खावा, थिलोड़, मंढाण, झावरी एवं कालौद, जींद जिले के गांव करसिंधु, पालवां, उचाना कलां, दुर्जनपुर, एव खेड़ी मसानियां का सर्वे किया। कृषि वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. कृष्णा रोलनिया, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनमोहन व डॉ. संदीप थे।

हिसार। नरमा फसल की जांच करते कृषि वैज्ञानिक। फोटो :हरिभूमि

हल्की जमीन वाले क्षेत्रों में ज्यादा समस्या

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे में यह बात निकलकर सामने आई कि जिन इलाकों में हल्की जमीन है, उन खेतों में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। हिसार के कुछ क्षेत्र तथा भिवानी के तोशाम के आस-पास के क्षेत्रों में पौधों के झुलसने व नीचे से पत्तियों के सूखने की समस्या अधिक पाई गई है। इसके अलावा जहां बारिश देरी से हुई उन क्षेत्रों में पौधों की पत्तियों के झुलसने की समस्या एकसाथ उत्पन्न हुई है। वर्षा का समय से न होना या बारिश का एक समान न होना भी इस समस्या का प्रमुख कारण है। कई खेतों में सूती मोल्ड, पैराविल्ट एवं जडगलन बीमारी के लक्षण भी दिखाई दिए हैं।

सफेद मक्खी का प्रकोप ज्यादा

इस साल सफेद मक्खी की संख्या बाकी वर्षों के मुकाबले ज्यादा है, किंतु प्रभावित एवं अच्छी फसल वाले इलाकों में सफेद मक्खी की संख्या एवं प्रकोप में ज्यादा अंतर नहीं मिला है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे के दौरान पाया गया है कि 62 से 75 प्रतिशत खेतों में सफेद मक्खी का स्तर आर्थिक कगार से ऊपर पाया गया, लेकिन दोमट मिट्टी वाले खेतों में कपास की फसल के खराब होने की समस्या कम पाई गई, जबकि रेतीली मिट्टी में उगाई गई कपास में यह समस्या ज्यादा पाई गई है।

ऐसे करें फसल का बचाव

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पत्तों पर छिडकाव के रूप में 2.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 100 लीटर पानी या पोटैशियम नाइट्रेट(13-00-45) की 2.0 किलोग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से प्रयोग करें। इसके अलावा सफेद मक्खी के लिए स्पाइरोमेसिफेन (ऑबरोन) 22.9 एस.सी. की 240 मिलीलीटर मात्रा या नीम आधारित कीटनाशक (निम्बिसीडीन/ अचूक) की 1.0 लीटर मात्रा या पाइरीप्रोक्सीफेन(डायटा)10 ई.सी. की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से पौधों पर निचली पत्तियों तक छिड़काव करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......अमर उजाला......
दिनांक 3.9.2020 पृष्ठ संख्या 3 कॉलम 6-8

कृषि वैज्ञानिकों ने किया नरमा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों की एक टीम ने नरमे की फसल में इन दिनों आई समस्या के मद्देनजर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान फसल में आई समस्या के कारणों का पता लगाते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने पाया कि हल्की जमीन जहां समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं हुई, पोषण प्रबंधन का अभाव, सफेद मक्खी के लिए अनुकूल वातावरण एवं फसलों में बिना सिफारिश के कीटनाशकों व फफूंदनाशकों का मिश्रित प्रयोग इत्यादि कारण है।

कृषि वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. कृष्णा रोलनिया, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनमोहन व डॉ. संदीप कुमार शामिल थे। टीम ने हिसार के खरकड़ा, हसनगढ़, न्यौली कलां, भेरियां, बहबलपुर, बरवाला एवं कुंभाखेड़ा, भिवानी जिले के गांव बक्खतावरपुरा, मंढोली कलां, ईशरवाल, सरल, खरखड़ी-माखवान, गारणपुरा खुर्द, मिरान, खावा, थिलोड़, मंढाण, झावरी एवं कालौद, जींद जिले के गांव करसिंधु, पालवां, उचाना कलां, दुर्जनपुर, कापड़ो एव खेड़ी मसानियां गांवों का सर्वे किया।

नरमा फसल की जांच करते हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक।

वैज्ञानिकों के अनुसार - हलकी जमीन, कम बारिश और कीटनाशकों को बिना सिफारिश उपयोग करने से खराब हुई फसल

हल्की जमीन वाले क्षेत्रों में ज्यादा समस्या : कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे में यह बात निकलकर सामने आई कि जिन इलाकों में हल्की जमीन है, उन खेतों में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। हिसार के कुछ क्षेत्र तथा भिवानी के तोशाम के आस-पास के क्षेत्रों में पौधों के झुलसने व नीचे से पत्तियों के सूखने की समस्या अधिक पाई गई है। इसके अलावा जहां बारिश देरी से हुई उन क्षेत्रों में पौधों की पत्तियों के झुलसने की समस्या एकसाथ उत्पन्न हुई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......नभ छोर.......

दिनांक 2. 9. 2020 ....पृष्ठ संख्या...... – ......कॉलम...... – ......

हकृवि में स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा 6 से

हिसार/02 सितंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना महामारी के चलते स्नातकोत्तर व पीएचडी प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा की तिथियां चार दिनों में विभाजित कर तय कर दी हैं। सभी परीक्षाएं विद्यार्थियों की सामाजिक दूरी, मास्क व सैनेटाइजर का विशेष ध्यान रखते हुए आयोजित कराई जाएंगी। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि प्रतिवर्ष ये परीक्षाएं जून व जुलाई माह में आयोजित की जाती रही हैं, लेकिन कोरोना महामारी के चलते इस बार परीक्षाओं को 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को करवाया जाएगा। उन्होंने उम्मीदवारों व उनके अभिभावकों से अपील की है कि वे स्नातक व स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिला संबंधी नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर चेक करते रहें। उन्होंने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिले विश्वविद्यालय के दाखिला पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे। इस वर्ष किसी प्रकार की फिजीकल रिपोटिंग नहीं होगी। उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड किए गए कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी तो उसे फार्म भरते समय उम्मीदवारों द्वारा दिए गए मोबाइल नंबर व ई-मेल आईडी पर सूचित किया जाएगा। अगर किसी उम्मीदवार ने निर्धारित समय अवधि में सूचना के बावजूद इस कमी को दूर नहीं किया तो पहली काउंसलिंग में उसे सीट अलॉट नहीं की जाएगी। दूसरी काउंसलिंग के लिए तिथि अलग से जारी की जाएंगी। इसके अलावा विश्वविद्यालय के प्रोस्पेक्ट्स में दिए दाखिला व आरक्षण संबंधी नियम व शर्तों में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होगा। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने सभी परीक्षार्थियों से आह्वान किया है कि वे परीक्षा के लिए अपनी तैयारी जारी रखें और परीक्षा संबंधी किसी हिदायत व बदलाव के संबंध में विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देखते रहें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....पाठक पक्ष....
दिनांक 2.9.2020...पृष्ठ संख्या....—....कॉलम....—....

एचएयू ने जारी की स्नातकोत्तर प्रोग्रामों की परीक्षा व काउंसलिंग की तिथियां

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 2 सितम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना महामारी के चलते स्नातकोत्तर व पीएचडी प्रोग्रामों के लिए परीक्षा की तिथियां चार दिनों में विभाजित कर तय कर दी हैं। सभी परीक्षाएं विद्यार्थियों की सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजर का विशेष ध्यान रखते हुए आयोजित कराई जाएंगी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने सभी परीक्षार्थियों से आह्वान किया है कि वे परीक्षा के लिए अपनी तैयारी जारी रखें और परीक्षा संबंधी किसी हिदायत व बदलाव के संबंध में विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देखते रहें। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से यह फैसला कोरोना महामारी के चलते लिया गया है। उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष ये परीक्षाएं जून व जुलाई माह में आयोजित की जाती रही हैं, लेकिन कोरोना महामारी के चलते इस बार परीक्षाओं को सितंबर माह के प्रथम पखवाड़े से कराया जाएगा। इसके लिए सभी परीक्षाओं की तिथियां घोषित कर दी गई हैं, जिनमें उत्तर कुंजी प्रकाशित करने व परिणाम घोषित करने की तिथियां भी शामिल हैं। इसी प्रकार ऑनलाइन काउंसलिंग, कागजातों या प्रमाण-पत्रों में किसी प्रकार की कमी संबंधी जानकारी, कमी दूर करने की तिथि, ऑनलाइन सीट अलॉटमेंट व ऑलनाइन फीस जमा करवाने, मेडिकल जांच और कोर्स पंजीकरण के लिए भी तिथियां निर्धारित कर दी गई हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई हैं। उन्होंने उम्मदवारों व उनके अभिभावकों से अपील की है कि वे स्नातक व स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिला संबंधी नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट admissions.hau.ac.in and hau.ac.in पर चेक करते रहें।

ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे दाखिले, नहीं होगी फिजीकल रिपोर्टिंग

स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिले विश्वविद्यालय के दाखिला पोर्टल admissions.hau.ac.in के माध्यम से ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे। इस वर्ष किसी प्रकार की फिजीकल रिपोर्टिंग नहीं होगी। उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड किए गए कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी तो उसे फार्म भरते समय उम्मीदवारों द्वारा दिए गए मोबाइल नंबर व ई-मेल आईडी पर सूचित किया जाएगा। अगर किसी उम्मीदवार ने निर्धारित समय अवधि में सूचना के बावजूद इस कमी को दूर नहीं किया तो पहली काउंसलिंग में उसे सीट अलॉट नहीं की जाएगी। दूसरी काउंसलिंग के लिए तिथि अलग से जारी की जाएगी। इसके अलावा विश्वविद्यालय के प्रोस्पेक्टस में दिए दाखिला व आरक्षण संबंधी नियम व शर्तों में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाँच बजे.....

दिनांक 3.9.2020....पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

ऑनलाइन काउंसलिंग की तिथियां भी जारी

हकृवि ने जारी की स्नात्तकोत्तर प्रोग्रामों की परीक्षा की तिथियां

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना महामारी के चलते स्नातकोत्तर व पीएचडी प्रोग्रामों के लिए परीक्षा की तिथियां चार दिनों में विभाजित कर तय कर दी हैं। सभी परीक्षाएं विद्यार्थियों की सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजर का विशेष ध्यान रखते हुए आयोजित कराई जाएंगी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने सभी परीक्षार्थियों से आह्वान किया है कि वे परीक्षा के लिए अपनी तैयारी जारी रखें और परीक्षा संबंधी किसी हिदायत व बदलाव के संबंध में विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देखते रहें। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से यह फैसला कोरोना महामारी के चलते लिया गया है। उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष ये परीक्षाएं जून व जुलाई माह में आयोजित की जाती रही हैं, लेकिन कोरोना महामारी के चलते इस बार परीक्षाओं को सितंबर माह के प्रथम पखवाड़े से कराया जाएगा। इसके लिए सभी परीक्षाओं की तिथियां घोषित कर दी गई हैं, जिनमें उत्तर कुंजी प्रकाशित करने व परिणाम घोषित करने की तिथियां भी शामिल हैं। इसी प्रकार ऑनलाइन काउंसलिंग, कागजातों या प्रमाण-पत्रों में किसी प्रकार की कमी संबंधी जानकारी, कमी दूर करने की तिथि, ऑनलाइन सीट अलॉटमेंट व ऑलनाइन फीस जमा करवाने, मेडिकल जांच और कोर्स पंजीकरण के लिए भी तिथियां निर्धारित कर दी गई हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई हैं। उन्होंने उम्मदवारों व उनके अभिभावकों से अपील की है कि वे स्नातक व स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिला संबंधी नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट admissions.hau.ac.in and hau.ac.in पर चेक करते रहें।

ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे दाखिले, नहीं होगी फिजीकल रिपोर्टिंग

स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिले विश्वविद्यालय के दाखिला पोर्टल admissions.hau.ac.in के माध्यम से ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे। इस वर्ष किसी प्रकार की फिजीकल रिपोर्टिंग नहीं होगी। उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड किए गए कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी तो उसे फार्म भरते समय उम्मीदवारों द्वारा दिए गए मोबाइल नंबर व ई-मेल आईडी पर सूचित किया जाएगा। अगर किसी उम्मीदवार ने निर्धारित समय अवधि में सूचना के बावजूद इस कमी को दूर नहीं किया तो पहली काउंसलिंग में उसे सीट अलॉट नहीं की जाएगी। दूसरी काउंसलिंग के लिए तिथि अलग से जारी की जाएंगी। इसके अलावा विश्वविद्यालय के प्रोस्पेक्ट्स में दिए दाखिला व आरक्षण संबंधी नियम व शर्तों में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ......सच कहूँ......

दिनांक ..3.9.2020.. पृष्ठ संख्या ....-.... कॉलम ....-....

पीएचडी कोर्स में प्रवेश के लिए परीक्षा की तिथियां घोषित

हिसार(सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय ने स्नातकोत्तर व पीएचडी कोर्स में प्रवेश के लिए परीक्षा की तिथियां घोषित कर दी हैं। विश्वविद्यालय के एक प्रवक्ता ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि कोरोना महामारी के चलते सोशल डिस्टेंसिग के नियमों का पालन करते हुए 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर 2020 को आयोजित की जाएंगी। उन्होंने बताया कि उक्त कोर्सों में दाखिले ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे। इस वर्ष किसी प्रकार की फिजीकल रिपोर्टिंग नहीं होगी। उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड किए गए कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी तो उनके मोबाइल नंबर व ई-मेल आईडी पर सूचित किया जाएगा। अगर किसी उम्मीदवार ने निर्धारित समय अवधि में सूचना के बावजूद इस कमी को दूर नहीं किया तो पहली काउंसलिंग में उसे सीट अलॉट नहीं की जाएगी। दूसरी काउंसलिंग के लिए तिथि अलग से जारी की जाएंगी। उन्होंने बताया कि सभी आवेदक दाखिला संबंधी नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर नियमित अपडेट लेते रहें।

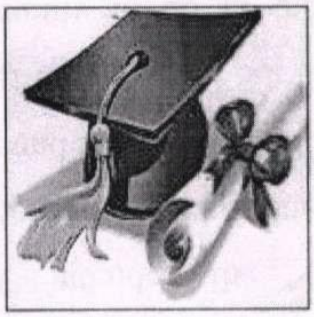

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....नित्य शक्ति टाइम्स.....

दिनांक 2.9.2020 पृष्ठ संख्या...—...कॉलम...—...

परीक्षा के लिए अपनी तैयारी जारी रखें : प्रो. समर सिंह

चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय ने जारी की स्नातकोत्तर प्रोग्रामों की परीक्षा व ऑनलाइन काउंसलिंग की तिथियां भी जारी

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना महामारी के चलते स्नातकोत्तर व पीएचडी प्रोग्रामों के लिए परीक्षा की तिथियां चार दिनों में विभाजित कर तय कर दी हैं। सभी परीक्षाएं विद्यार्थियों की सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजर का विशेष ध्यान रखते हुए आयोजित कराई जाएंगी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने सभी परीक्षार्थियों से आह्वान किया है कि वे परीक्षा के लिए अपनी तैयारी जारी रखें और परीक्षा संबंधी किसी हिदायत व बदलाव के संबंध में विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देखते रहें।

सितंबर के प्रथम पखवाड़े में होगी परीक्षा : आशा कवात्रा

स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से यह फैसला कोरोना महामारी के चलते लिया गया है। उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष ये परीक्षाएं जून व जुलाई माह में आयोजित की जाती रही हैं, लेकिन कोरोना महामारी के चलते इस बार परीक्षाओं को सितंबर माह के प्रथम पखवाड़े से कराया जाएगा। इसके लिए सभी परीक्षाओं की तिथियां घोषित कर दी गई हैं, जिनमें उत्तर कुंजी प्रकाशित करने व परिणाम घोषित करने की तिथियां भी शामिल हैं। इसी प्रकार ऑनलाइन काउंसलिंग, कागजातों या प्रमाण-पत्रों में किसी प्रकार की कमी संबंधी जानकारी, कमी दूर करने की

तिथि, ऑनलाइन सीट अलॉटमेंट व ऑलनाइन फीस जमा करवाने, मेडिकल जांच और कोर्स पंजीकरण के लिए भी तिथियां निर्धारित कर दी गई हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई हैं। उन्होंने उम्मदवारों व उनके अभिभावकों से अपील की है कि वे स्नातक व स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिला संबंधी नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर चेक करते रहें।

ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे दाखिले

स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिले विश्वविद्यालय के दाखिला पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन माध्यम से ही होंगे। इस वर्ष किसी प्रकार की फिजीकल रिपोटिंग नहीं होगी। उम्मीदवारों द्वारा फार्म में अपलोड किए गए कागजातों की जांच के बाद किसी प्रकार की कमी होगी तो उसे फार्म भरते समय उम्मीदवारों द्वारा दिए गए मोबाइल नंबर व ई-मेल आईडी पर सूचित किया जाएगा। अगर किसी उम्मीदवार ने निर्धारित समय अवधि में सूचना के बावजूद इस कमी को दूर नहीं किया तो पहली काउंसलिंग में उसे सीट अलॉट नहीं की जाएगी। दूसरी काउंसलिंग के लिए तिथि अलग से जारी की जाएंगी। इसके अलावा विश्वविद्यालय के प्रोस्पेक्ट्स में दिए दाखिला व आरक्षण संबंधी नियम व शर्तों में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....जगमार्ग न्यूज.....

दिनांक 2.1.2020.....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

दौरा एचएयू के कृषि वैज्ञानिकों ने किया नरमा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

जरूरत के समय कम बारिश से हुई फसल खराब

जगमार्ग न्यूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा नरमा कपास की फसल में इन दिनों आई समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया।

इस दौरान फसल में आई समस्या के कारणों का पता लगाते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने पाया कि हल्की जमीन जहां समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं हुई, पौषण प्रबंधन का अभाव, सफेद मक्खी के लिए अनुकूल वातावरण एवं फसलों में बिना सिफारिश के कीटनाशकों व फफूंदनाशकों का मिश्रित प्रयोग, इत्यादि कारण है। इसके अलावा फसल का प्रभावित करने वाले कई अन्य कारण भी शामिल है। कृषि वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. ओमेंद सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. कृष्णा रेलनिया, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनमोहन व डॉ. संदीप कुमार शामिल थे। इन वैज्ञानिकों की टीम ने हिसार के खरकड़ा, हसनगढ़, न्योली कलां, भेरियां, बहबलपुर, बरवाला एवं कुंभाखेड़ा, भिवानी जिले के गांव बवखतावरपुरा, मंढोली कलां, ईशरवाल, सरल, खरखड़ी-माखवान, गारणपुरा खुर्द, मिरान, खाबा, थिलोड़, मंढाण, झावरी एवं कालौद, जींद जिले के गांव करसिंधु, पालवां, उचाना कलां, दुर्जनपुर, कापड़ो एव खेड़ी मसानियां का सर्वे किया। कृषि वैज्ञानिकों के

➪ हल्की जमीन वाले क्षेत्रों में ज्यादा समस्या

अनुसार सर्वे में यह बात निकलकर सामने आई कि जिन इलाकों में हल्की जमीन है, उन खेतों में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। हिसार के कुछ क्षेत्र तथा भिवानी के तोशाम के आसपास के क्षेत्रों में पौधों के झुलसने व नीचे से पत्तियों के सूखने की समस्या अधिक पाई गई है। इसके अलावा जहां बारिश देरी से हुई उन क्षेत्रों में पौधों की पत्तियों के झुलसने की समस्या एकसाथ उत्पन्न हुई है। वर्षा का समय से न होना या बारिश का एक समान न होना भी इस समस्या का प्रमुख कारण है। इसके अलावा कपास की फसल में इस समय टिण्डे बन चुके हैं और पौधों को अच्छी खुराक व नमी की आवश्यकता है। रेतीली मिट्टी में जमीन में उपलब्ध पोषक तत्वों की उपलब्धता अच्छी बारिश होने पर या अच्छी सिंचाई करने पर इस अवस्था में कम हो जाती हैं। इसलिए पोषक तत्वों का पत्तों पर छिड़काव मददगार साबित हो सकता है। इसके अलावा कपास की संकर किस्मों (हाइब्रिड) की जड़ों का विकास भी कम पाया गया। कई खेतों में सूती मोल्ड, पैराविल्ट एवं जडगलन बीमारी के लक्षण भी दिखाई दिए हैं। इस साल सफेद मक्खी की संख्या बाकी वर्षों के मुकाबले ज्यादा है, किंतु प्रभावित एवं अच्छी फसल वाले इलाकों में सफेद मक्खी की संख्या एवं प्रकोप में ज्यादा अंतर नहीं मिला है। रेतीली जमीन में नमी एवं पोषक तत्वों पर खास ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अलावा किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश की फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग किया गया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौषण के चलते समस्या बढ़ी है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे के दौरान पाया गया है कि 62 से 75 प्रतिशत खेतों में सफेद मक्खी का स्तर आर्थिक कगार से ऊपर पाया गया, लेकिन दोमट मिट्टी वाले खेतों में कपास की फसल के खराब होने की समस्या कम पाई गई, जबकि रेतीली मिट्टी में उगाई गई कपास में यह समस्या ज्यादा पाई गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सिटी पल्स.....

दिनांक 2.9.2020...पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

एचएयू के कृषि वैज्ञानिकों ने किया नरमा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा, कहा समन्वित प्रबंधन जरूरी

जरूरत के समय कम बारिश होने सहित कई अन्य कारणों से हुई फसल खराब

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा नरमा कपास की फसल में इन दिनों आई समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान फसल में आई समस्या के कारणों का पता लगाते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने पाया कि हल्की जमीन जहां समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं हुई, पौषण प्रबंधन का अभाव, सफेद मक्खी के लिए अनुकूल वातावरण एवं फसलों में बिना सिफारिश के कीटनाशकों व फफूंदनाशकों का मिश्रित प्रयोग, इत्यादि कारण है। इसके अलावा फसल को प्रभावित करने वाले कई अन्य कारण भी शामिल हैं। कृषि वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. कृष्णा रोलनिया, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनमोहन व डॉ. संदीप कुमार शामिल थे। इन वैज्ञानिकों की टीम ने हिसार के खरकड़ा, हसनगढ़, न्यौली कलां, भेरियां, बहबलपुर, बरवाला एवं कुंभाखेड़ा, भिवानी जिले के गांव बक्सताबरपुरा, मंढोली कलां, ईशरवाल, सरल, खरखड़ी-माखवान, गारणपुरा खुर्द, मिरान, खावा, थिलोड़, मंढाण, झावरी एवं कालींद, जींद जिले के गांव करसिंधु, पालवां, उचाना कलां, दुर्जनपुर, कापड़ो एव खेड़ी मसानियां का सर्वे किया।

हिसार। किसानों से बातचीत करते विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक।

हल्की जमीन वाले क्षेत्रों में ज्यादा समस्या

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे में यह बात निकलकर सामने आई कि जिन इलाकों में हल्की जमीन है, उन क्षेत्रों में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। हिसार के कुछ क्षेत्र तथा भिवानी के तोशाम के आस-पास के क्षेत्रों में पौधों के झुलसने व नीचे से पत्तियों के सूखने की समस्या अधिक पाई गई है। इसके अलावा जहां बारिश देरी से हुई उन क्षेत्रों में पौधों की पत्तियों के झुलसने की समस्या एकसाथ उत्पन्न हुई है। वर्षा का समय से न होना या बारिश का एक समान न होना भी इस समस्या का प्रमुख कारण है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... नभ छोर ....

दिनांक 2. 9. 2020 ....पृष्ठ संख्या........ — ....कॉलम........ — ....

नरमा कपास फसल खराब होने के विभिन्न कारण बताए वैज्ञानिकों ने

हिसार/02 सितंबर/रिपोर्टर

हकृवि वैज्ञानिकों की एक टीम ने नरमा कपास की फसल में इन दिनों आई समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान फसल में आई समस्या के कारणों का पता लगाते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने पाया कि हल्की जमीन जहां समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं हुई। पोषण प्रबधंन का अभाव, सफेद मक्खी के लिए अनुकूल वातावरण एवं फसलों में बिना सिफारिश के कीटनाशकों व फफूंदनाशकों का मिश्रित प्रयोग, इत्यादि कारण है। इसके अलावा फसल को प्रभावित करने वाले कई अन्य कारण भी शामिल हैं। कृषि वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. कृष्णा रोलनिया, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनमोहन व डॉ. संदीप कुमार शामिल थे। इन वैज्ञानिकों की टीम ने हिसार के खरकड़ा, हसनगढ़, न्यौली कलां, भेरियां, बहबलपुर, बरवाला एवं कुंभाखेड़ा, भिवानी जिले के गांव बक्खतावरपुरा, मंढोली कलां, ईशरवाल, सरल, खरखड़ी-माखवान, गारणपुरा खुर्द, मिरान, खावा, थिलोड़, मंढाण, झावरी एवं कालौद, जींद जिले के गांव करसिंधु, पालवां, उचाना कलां, दुर्जनपुर, कापड़ो एव खेड़ी मसानियां का सर्वे किया। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे में यह बात निकलकर सामने आई कि जिन इलाकों में हल्की जमीन है, उन खेतों में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। हिसार के कुछ क्षेत्र तथा भिवानी के तोशाम के आस-गास के क्षेत्रों में पौधों के झुलसने व नीचे से पत्तियों के सूखने की समस्या अधिक पाई गई है। इसके अलावा जहां बारिश देरी से हुई उन क्षेत्रों में पौधों की पत्तियों के झुलसने की समस्या एक साथ उत्पन्न हुई है। वर्षा का समय से न होना या बारिश का एक समान न होना भी इस समस्या का प्रमुख कारण है। इसके अलावा कपास की फसल में इस समय टिण्डे बन चुके हैं और पौधों को अच्छी खुराक व नमी की आवश्यकता है। रेतीली मिट्टी में जमीन में उपलब्ध पोषक तत्वों की उपलब्धता अच्छी बारिश होने पर या अच्छी सिंचाई करने पर इस अवस्था में कम हो जाती हैं। इसलिए पोषक तत्वों का पत्तों पर छिड़काव मददगार साबित हो सकता है। इसके अलावा कपास की संकर किस्मों (हाइब्रिड) की जड़ों का विकास भी कम पाया गया। कई खेतों में सूती मोल्ड, पैराविल्ट एवं जड़गलन बीमारी के लक्षण भी दिखाई दिए हैं। इस साल सफेद मक्खी की संख्या बाकी वर्षों के मुकाबले ज्यादा है, किंतु प्रभावित एवं अच्छी फसल वाले इलाकों में सफेद मक्खी की संख्या एवं प्रकोप में ज्यादा अंतर नहीं मिला है। रेतीली जमीन में नमी एवं पोषक तत्वों पर खास ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अलावा किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश की फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग किया गया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौषण के चलते समस्या बढ़ी है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे के दौरान पाया गया है कि 62 से 75 प्रतिशत खेतों में सफेद मक्खी का स्तर आर्थिक कगार से ऊपर पाया गया, लेकिन दोमट मिट्टी वाले खेतों में कपास की फसल के खराब होने की समस्या कम पाई गई, जबकि रेतीली मिट्टी में उगाई गई कपास में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि कपास की फसल में आई समस्या की केवल जांच के बाद ही सिफारिश किए गए कीटनाशक या फफूंदनाशी का प्रयोग करना चाहिए। कपास की फसल में सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी के लिए 20 पौधों का निरीक्षण सप्ताह में दो बार करें और कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों की सलाह से ही फसल में आवश्यकतानुसार कीटनाशकों का प्रयोग करें। कीटनाशकों के मिश्रित घोल के प्रयोग से बचें क्योंकि ये सफेद मक्खी की समस्या को बढ़ावा दे सकते हैं। खासकर हल्की मिट्टी में उगाई गई कपास में खाद प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....नित्य शक्ति टाईम्स.....

दिनांक 2:9:2020.....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

एचएयू के कृषि वैज्ञानिकों ने किया नरमा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

जरूरत के समय कम बारिश होने सहित कई अन्य कारणों से हुई फसल खराब

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा नरमा कपास की फसल में इन दिनों आई समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान फसल में आई समस्या के कारणों का पता लगाते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने पाया कि हल्की जमीन जहां समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं हुई, पौषण प्रबधंन का अभाव, सफेद मक्खी के लिए अनुकूल वातावरण एवं फसलों में बिना सिफारिश के कीटनाशकों व फफूंदनाशकों का मिश्रित प्रयोग, इत्यादि कारण है। इसके अलावा फसल का प्रभावित करने वाले कई अन्य कारण भी शामिल हैं। कृषि वैज्ञानिकों की टीम में डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. कृष्णा रोलनिया, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनमोहन व

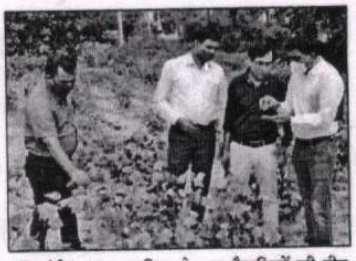

डॉ. संदीप कुमार शामिल थे। इन वैज्ञानिकों की टीम ने हिसार के खरकड़ा, हसनगढ़, न्यौली कलां, भेरियां, बहयलपुर, बरवाला एवं कुंभाखेड़ा, भिवानी जिले के गांव बक्खतावरपुरा, मंढोली कलां, ईशरवाल, सरल, खरखड़ी-माखवान, गारणपुरा खुर्द, मिरान, खावा, थिलोड़, मंढाण, झावरी एवं कालीद, जींद जिले के गांव करसिंधु, पालवां, उचाना कलां, दुर्जनपुर, कापड़ो एव खेड़ी मसानियां का सर्वे किया।

हल्की जमीन वाले क्षेत्रों में ज्यादा समस्या

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार सर्वे में यह बात निकलकर सामने आई कि जिन इलाकों में हल्की जमीन है, उन खेतों में यह समस्या ज्यादा पाई गई है। हिसार के कुछ क्षेत्र तथा भिवानी के तोशाम के आस-पास के क्षेत्रों में पौधों के झुलसने व नीचे से पत्तियों के सूखने की समस्या अधिक पाई गई है। इसके अलावा जहां बारिश देरी से हुई उन क्षेत्रों में पौधों की पत्तियों के झुलसने की समस्या एकसाथ उत्पन्न हुई है। वर्षा का समय से न होना या बारिश का एक समान न होना भी इस समस्या का प्रमुख कारण है। इसके अलावा कपास की फसल में इस समय टिण्डे बन चुके हैं और पौधों को अच्छी खुराक व नमी की आवश्यकता है। रेतीली मिट्टी में जमीन में उपलब्ध पोषक तत्वों की उपलब्धता अच्छी बारिश होने पर या अच्छी सिंचाई करने पर इस अवस्था में कम हो जाती हैं। इसलिए पोषक तत्वों का पत्तों पर छिड़काव मददगार साबित हो सकता है। इसके अलावा कपास की संकर किस्मों (हाइब्रिड) की जड़ों का विकास भी कम पाया गया। कई खेतों में सूती मोल्ड, पैराविल्ट एवं जड़लन बीमारी के लक्षण भी दिखाई दिए हैं। इस साल सफेद मक्खी की संख्या बाकी वर्षों के मुकाबले ज्यादा है, किंतु प्रभावित एवं अच्छी फसल वाले इलाकों में सफेद मक्खी की संख्या एवं प्रकोप में ज्यादा अंतर नहीं मिला है। रेतीली जमीन में नमी एवं पोषक तत्वों पर खास ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अलावा किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश की फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग किया गया है।

ऐसे करें फसल का बचाव

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पत्तों पर छिड़काव के रूप में 2.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 100 लीटर पानी या पोटैशियम नाइट्रेट(13-00-45) की 2.0 किलोग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से प्रयोग करें। इसके अलावा सफेद मक्खी के लिए स्पाइरोमेसिफेन (ओबरोन) 22.9 एस.सी. की 240 मिलीलीटर मात्रा या नीम आधारित कीटनाशक (निम्बिसीडीन/ अचूक) की 1.0 लीटर मात्रा या पाइरीप्रोक्सीफेन(ड्यायटा)10 ई.सी. की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से पौधों पर निचली पत्तियों तक छिड़काव करें। यदि कपास के पत्ते ज्यादा काले दिखाई दें तो कॉपर ऑक्सिक्लोराइड की 600 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। पेराविल्ट बीमारी के संभावित इलाकों में कोबाल्ट क्लोराइड की 2.0 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में लक्षण दिखाई देने के 24 से 48 घंटों के अंदर छिड़काव करें। जहां सिंचाई या बारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरझा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।